सतत् विकास की अवधारणा

स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के सन्दर्भ में

निवेदिता अवस्थी
योगेश चंद्र

ISBN : 978-93-91018-68-9

© सम्पादक

प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

: +9968082809, 9315194807

: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2023

अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। सम्पादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

सतत् विकास की अवधारणा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के सन्दर्भ में

निवेदिता अवस्थी, योगेश चंद्र

6. सतत् विकास में आर्थिक विकास की भूमिका 42

डॉ. गोरख नाथ

7. स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली: जनपद ऊधमसिंह नगर का एक सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन 48

जयप्रकाश जायसवाल

8. स्मार्टफोन प्रयोग व मानसिक स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती: साहित्यिक सर्वेक्षण 62

शौकीन

9. प्रकृति (पर्यावरण) का मानव से संबंध और स्वास्थ्य पर इसका सतत् प्रभाव व समस्याएं : एक कवि (साहित्यकार) के संदर्भ में 71

डॉ. रीता तिवारी

10. नशीले पदार्थों की लत : सरकार एवं विभिन्न संस्थाओं की भूमिका 87

सुनीता यादव

डॉ. मनीषा तिवारी

11. सतत् स्वास्थ्य, आर्थिक विकास और राष्ट्रीय विकास 95

डॉ. देवकीनन्दन जोशी

12. मानवीय स्वास्थ्य एवं सुरक्षा 110

ध्रुव कुमार

वर्षा तिवारी

13. सतत् विकास : स्थिरता, संभावनाएँ, मुद्दे और चुनौतियाँ (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) 119

जया तिवारी

14. अल्पसंख्यक समुदायों में स्वास्थ्य जागरूकता (अब्बासी समुदाय के विशेष सन्दर्भ में) 123

फरहा नाज

डॉ. राजेश कुमार सिंह

14.

अल्पसंख्यक समुदायों में स्वास्थ्य जागरूकता (अब्बासी समुदाय के विशेष सन्दर्भ में)

फरहा नाज[1]
डॉ. राजेश कुमार सिंह[2]

प्रस्तावना

एक स्वच्छ एवं स्वस्थ जीवन व्यक्ति की अमूल्य निधि है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति सुखी और स्वस्थ रहना चाहता है। व्यक्ति को स्वस्थ तब कहा जाता है जब वो रोगमुक्त हो अर्थात् रोग न होने की अवस्था ही स्वास्थ्य है। यह तभी मुमकिन है जब आस-पास का वातावरण स्वच्छ हो। संस्कृत में कहावत है कि 'शरीर माद्यम् खलु धर्म साधनम्' अर्थात् शरीर ही सब कुछ है। इसी सन्दर्भ में महाकवि तुलसीदास जी ने कहा है कि 'शरीर ही धन और जीवन है'। स्वच्छता और स्वास्थ्य का गहरा सम्बन्ध है रोग और रोगी उतने

[1]शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, सरदार भगत सिंह रा.स्ना. महाविघालय, रूद्रपुर, ऊधम सिंह नगर।

[2]एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सरदार भगत सिंह रा.स्ना. महाविघालय, रूद्रपुर, ऊधम सिंह, नगर।

ही प्राचीन है, जितनी कि मानव सृष्टि। स्वच्छता हमें मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक हर तरीके से स्वस्थ बनाती है। 2014 में शुरू किया गया स्वच्छ भारत अभियान मिशन (एस.बी.एम.) स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के लिए सरकार द्वारा उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है। इस अभियान का उद्देश्य बुनियादी स्वच्छता सुविधाओं तक पहुँच सुनिश्चित करके खुले में शौच को समाप्त कर भारत को स्वच्छ और भारतीयों को स्वस्थ बनाना हैं और स्वच्छता प्रथाओं को बढ़ावा देना हैं। महात्मा गाँधी जी के लिए 'गन्दगी एक बुराई थी'।

अल्पसंख्यक समुदाय वह समुदाय हैं जिनकी संख्या समाज में अपेक्षाकृत कम होती हैं और अल्पसंख्यक स्थिति के कारण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं। अल्पसंख्यक के अन्तर्गत आने वाला अब्बासी मुस्लिम समुदाय जाति-व्यवस्था के निचले पायदान पर आता है। उत्तराखण्ड का अब्बासी समुदाय अन्य पिछड़े वर्गों की केन्द्रीय सूची में सक्का-भिस्ती, भिस्ती-अब्बासी के रूप में दर्ज है। अब्बासी मुस्लिम बिरादरी है, जो कि उत्तर भारत, पाकिस्तान, जम्मू कश्मीर, महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्र-प्रदेश, राजस्थान एवं नेपाल के तराई क्षेत्रों में पाई जाती हैं। जिनको अब्बासी, सक्का, भिस्ती एवं धुंद अब्बासी के नाम से जाना जाता है। परम्परागत रूप से इनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति बहुत निम्न रही है। अल्पसंख्यक समुदायों की जरूरतों और चिंताओं को दूर करने के लिए भारत सरकार की विभिन्न नीतियां और स्वास्थ्य कार्यक्रम हैं। अतः प्रस्तुत शोध में अब्बासी समुदाय की स्वास्थ्य और साफ-सफाई के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया हैं।

अब्बासी मुस्लिम समुदाय इस्लाम धर्मावलम्बी है। इस्लाम में सफाई निस्फ ईमान है अर्थात् 'सफाई मुसलमानों का आधा ईमान है कुरान और नमाज पढ़ने की लिए नमाज की पहली शर्त तहारत (पाकी) है, जिसके अनुसार नमाजी का बदन, लिबास और जिस जगह नमाज पढ़ रहा है उसका हर किस्म की नजासत (गन्दगी) से पाक होना जरूरी है। मुसलमानों को पांच वक्त की नमाज से पहले वुजू करने की आवश्यकता होती हैं। इसमें हाथ, चेहरा और पैरों को पानी से धोना शामिल हैं। गन्दगी से पाक-साफ रहकर ही हर तरह की बीमारियों से बचा जा सकता हैं। स्वास्थ्य और स्वच्छता इस्लामी शिक्षाओं के महत्वपूर्ण पहलू हैं। और मुसलमानों को अपने शरीर की देख-भाल करने

और स्वच्छता को बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैं। दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने और शरीर की सफाई रखने, खाद्य स्वच्छता में स्वच्छ और हलाल भोजन के महत्व पर जोर दिया जाता हैं। ताजा और साफ खाना खाने, ज्यादा खाने से बचने और खाने को बर्बाद ना करने पर बल दिया जाता हैं।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध पत्र में अब्बासी समुदाय में स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के द्वारा चयनित अब्बासी समुदाय के कुल 198 परिवार हल्द्वानी नगर तथा 93 परिवार काठगोदाम में निवास करते हैं इसमें से कुल 50 परिवारों को दैव निदर्शन लॉटरी पद्धति से चयनित किया गया है इस अध्ययन से सम्बंधित तथ्यों के संकलन हेतु प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ो का प्रयोग किया गया हैं प्राथमिक आकडों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया हैं। साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से परिवार की मुखिया से सूचनाएं प्राप्त की गयीं हैं। साथ ही द्वितीयक आकडों के लिए विभिन्न पुस्तकों, पत्र, पत्रिकाओं एवं शोध पत्रों का प्रयोग किया गया हैं।

उत्तरदाताओं के आवास की स्थिति

किसी भी समाज में व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं में आवास एक मौलिक आवश्यकता हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए एक छोटे व सुंदर घर का सपना देखता है, जो पक्का, सुंदर व स्वच्छ वातवरण में बना हो। प्रधानमंत्री आवास योजना (सबके लिए आवास) द्वारा भी व्यक्ति को अच्छा घर देने के लिए सरकार द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं। इस प्रकार सारणी संख्या- 01 में उत्तरदाताओं की आवासीय स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या-०१

आवास की स्थिति के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	आवास का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	कच्चा	00	00
2	पक्का	50	100
3	मिश्रित	00	00
	योग	50	100

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सभी उत्तरदाता पक्के आवास में रहते है।

उत्तरदाताओं के शौचालय की स्थिति

समाज को स्वच्छ व सुन्दर बनाने के लिए आवश्यक है कि समाज को गंदगीमुक्त करना। यह तभी मुमकिन हो सकता है जब हर घर में शौचालय की समुचित व्यवस्था हो। इसी के तहत भारत सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को की। इस योजना का मुख्य लक्ष्य लोगों को बाहर खुले में शौच करने से रोकना हैं। इसी सन्दर्भ में सारणी संख्या-02 में उत्तरदाताओं के यहाँ शौचालय की स्थिति का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं।

सारणी संख्या-०२

शौचालय की स्थिति के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

क्रम संख्या	शौचालय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	निर्मित	50	100
2	खुला	00	00
	योग	50	100

उपरोक्त सारणी के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सभी उत्तरदाता के यहाँ निर्मित शौचालय की समुचित व्यवस्था है, तथा वह खुले में शौच नहीं करते हैं।

उत्तरदाताओं के शौचालय से आने के बाद हाथ धोने की स्थिति

साफ-सफाई का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता हैं। सफाई के आभाव में शरीर अनेक संक्रामित रोगों जैसे- डायरिया, टाइफाइड, हुकवर्म, कुपोषण आदि से ग्रसित हो जाता हैं। शौचालय के इस्तेमाल के बाद हमारे हाथों पर कीटाणु दोगुने हो जाते हैं। बार-बार हाथ धोना और शौचालय से आने के

बाद हाथ साफ करना बहुत जरूरी होता है ऐसा करने से अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है। संक्रामक रोगों से बचने में सफाई अति आवश्यक है। अंग्रेजी में एक कहावत है कि 'प्रिवेंशन इज वैटर देन क्योर' अर्थात् इलाज से बचाव बेहतर होता है। इसी सम्बंध में सारणी संख्या- 03 में उत्तरदाताओं से साफ-सफाई से सम्बंधित शौचालय से आने के बाद हाथ कैसे साफ करते हैं, कि स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या-०३

शौचालय से आने के बाद हाथ साफ करने का वितरण

क्रम संख्या	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सिर्फ पानी से	00	00
2	राख से	00	00
3	साबुन से	42	84
4	सेनेटायजर	8	16
5	साफ नहीं करते	00	00
6	योग	50	100

सारणी के अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांश (84%) उत्तरदाता शौचालय से आने के बाद अपने हाथ साबुन से धोते हैं, वहीं 16% उत्तरदाता हाथ धोने के लिए सेनेटायजर का प्रयोग करते हैं। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि अब्बासी समुदाय में सभी लोग शौचालय से आने के बाद हाथ धोते हैं।

उत्तरदाताओं की मासिक धर्म के दौरान की स्थिति

मासिक धर्म के दौरान अधिक साफ-सफाई की जरूरत होती हैं। अशिक्षा और पिछड़ेपन के कारण बहुत सारे लोग आज भी इस अवधि में साफ-सफाई को लेकर सजग नहीं रहते व महिलाओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को बहुत गंभीरता से नहीं लिया जाता है। पुरूष वर्ग ही नहीं, अधिकांश महिलाएं भी इस अवधि की साफ-सफाई और स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को बहुत गंभीरता से नहीं लेती हैं। इस समय सफाई नहीं रखने की वजह से महिलाओं को यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्शन, शारीरिक व मानसिक समस्याएं, गुर्दे का खराब

हो जाना और अन्य भी बहुत सारी स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। इसी सम्बन्ध में सारणी संख्या-04 में मासिक धर्म के वक्त उनकी जागरूकता के स्तर को पता लगाने का प्रयास किया गया हैं।

सारणी संख्या-०४

मासिक धर्म के दौरान किये जाने वाले उपाय का वितरण

क्रम संख्या	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सैनिट्री पैड	32	64
2	मेन्स्त्रुअल कप	00	00
3	टैम्पोन का	00	00
4	कपड़े का	18	36
5	योग	50	100

सारणी से ज्ञात होता हैं कि 64% महिलाएं सैनिट्री पैड का इस्तेमाल करने लगी हैं, परन्तु वर्तमान में भी 36% महिलाएं कपड़े का इस्तेमाल कर रही हैं। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि अभी भी शिक्षा की कमी व जागरूकता के अभाव के कारण महिलाएं कपड़े का प्रयोग कर रहीं हैं।

उत्तरदाताओं की खाना खाने के पहले हाथ धोने की स्थिति

खाना खाने से पहले और बाद में हाथ धोना बहुत जरूरी हैं। गंदे हाथों से खाना खाने से फूड इन्फेक्शन, डायरिया और अन्य प्रकार की बीमारियों के होने का खतरा सबसे अधिक होता है। हमारे हाथों में कई ऐसे रोगाणु लग जाते है, जिसकी वजह से बीमारियाँ हमारे शरीर में प्रवेश कर जाती हैं। खाना खाने से पहले लगभग 20 सैकंड तक साबुन से अपने हाथों, उंगलियों और नाखूनों को अच्छे से साफ करके ही खाना खाना चाहिये। इसी सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की जागरूकता का विवरण सारणी संख्या-05 में दर्शाने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या-०५

खाना खाने से पहले हाथ धोने का वितरण

क्रम संख्या	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	48	98
2	नहीं	02	04
	योग	50	100

उपर्युक्त सारणी-06 के तथ्यों के विश्लेषण से विदित होता हैं कि अधिकतर उत्तरदाता खाना खाने से पहले हाथों को धोना आवश्यक समझते हैं। परन्तु 4% उत्तरदाता खाना खाने से पहले हाथ धोने पर ध्यान नहीं देते व जरूरी नहीं समझते हैं। खाना खाने से पहले अच्छी तरह से हाथ धोना व पानी से मुहं साफ करना इस्लाम में सुन्नत भी हैं। अधिकतर उत्तरदाता इस सुन्नत पर अमल करते हैं।

उत्तरदाताओं के रेगुलर हैल्थ चेक-अप की स्थिति

अच्छा स्वास्थ्य व्यक्ति के लिए किसी वरदान से कम नहीं होता हैं। प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ और खुश रहना चाहता हैं। इसीलिए वह स्वस्थ रहने के लिए अनेक प्रकार के जतन करता रहता हैं। रेगुलर हैल्थ चेक-अप जिसमें पूरे शरीर का टेस्ट किया जाता हैं। इस टेस्ट के माध्यम से किसी भी बीमारी का आसानी से पता लगाया जा सकता हैं। इसी से सम्बंधित उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ो का विवरण सारणी संख्या- 06 दिखने का प्रयास किया गया हैं।

सारणी संख्या-०६

उत्तरदाताओं की रेगुलर हैल्थ चेक-अप की स्थिति

क्रम संख्या	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	तीन महीने या उससे कम	00	00
2	तीन महीने से अधिक	00	00
3	एक वर्ष से अधिक	05	10
4	कभी नहीं	45	90
	योग	50	100

जाता है कि स्वास्थ्य शिविरों के आयोजनों के द्वारा लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जाता हैं, परन्तु इस समुदाय के लोगों ने स्वयं को इसका लाभ प्राप्त करने से वंचित रखा हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में अल्पसंख्यक समुदायों में विशेषतौर से अब्बासी समुदाय के सन्दर्भ में स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जागरूकता का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत कुल 50 परिवारों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता के स्तर को जानने का प्रयास किया गया है जिसमें पाया गया है कि सभी उत्तरदाता पक्के आवास में रहते हैं। तथा इनके यहाँ निर्मित शौचालय की समुचित व्यवस्था हैं। वह खुले में शौच नहीं करते हैं। सभी लोग शौचालय से आने के बाद हाथ धोने को महत्वपूर्ण समझते हैं 64 प्रतिशत महिलाएं सैनिट्री पैड तथा 36 प्रतिशत महिलाएं वर्तमान में भी शिक्षा की कमी व जागरूकता के अभाव के कारण कपड़े का प्रयोग कर रहीं हैं। 98 प्रतिशत अधिकतर उत्तरदाता खाना खाने से पहले हाथों को धोना आवश्यक समझते हैं। परन्तु 4 प्रतिशत उत्तरदाता खाना खाने से पहले हाथ धोने पर ध्यान नहीं देते व जरूरी नहीं समझते हैं। 90 प्रतिशत उत्तरदाता अपने स्वास्थ्य की समस्याओं को जानने के लिए रेगुलर हैल्थ चेक-अप नही कराते। क्योंकि ये टेस्ट महंगा भी होता हैं और बिना बीमारी के लोग इस चेक-अप को करवाना जरूरी नहीं समझते। अधिकांश 52 प्रतिशत उत्तरदाता नयी विधि (फिल्टर) द्वारा जल को शुद्ध करते हैं और। 8 प्रतिशत उत्तरदाता पानी शुद्ध करने के लिए फिटकरी या क्लोरीन का प्रयोग करते हैं। 40 प्रतिशत उत्तरदाता पानी को शुद्ध करने के लिए कुछ नहीं करते हैं। वर्तमान समय में सभी उत्तरदाता आधुनिक विधि एल. पी. जी. गैस का ही प्रयोग कर रहे हैं। समाज में आयुर्वेदिक विधि सबसे प्राचीन होने के बाद भी उत्तरदाता एलोपैथिक विधि को ज्यादा महत्व देते हैं। अधिकांश 62 प्रतिशत उत्तरदाता योजनाओं का लाभ प्राप्त नहीं कर रहें हैं, तथा 38 प्रतिशत उत्तरदाता विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में सक्षम हैं। जिनमें 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अटल आयुष्मान योजना, 10 प्रतिशत मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना, 16 प्रतिशत जननी शिशु सुरक्षा

योजना का लाभ प्राप्त किया हैं। अधिकतर उत्तरदाता जागरूकता के अभाव के कारण योजनाओं को प्राप्त करने में अक्षम हैं। वर्तमान में इस समुदाय के सभी उत्तरदाता अपने सभी बच्चों के टीकाकरण करने तथा सरकार के इस कार्यक्रम में पूरा सहयोग कर रहे हैं। इस समुदाय के अधिकांश उत्तरदाता प्रसव के लिए सरकारी व प्राइवेट अस्पतालों में जाना पसंद करते हैं। अंत में अधिकांश (66 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का कहना हैं कि स्वास्थ्य शिविरों का क्षेत्र में आयोजन तो होता हैं, लेकिन वह इसका लाभ प्राप्त नहीं करते हैं। स्वास्थ्य शिविरों के आयोजनों के द्वारा लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जाता हैं, परन्तु इस समुदाय के लोगों ने स्वयं को इसका लाभ प्राप्त करने से वंचित रखा हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चनसौरिया, मुकेश (2008), ग्रामीण स्वास्थ्य- ग्रामीण विकास में स्वास्थ्य सेवाओं का महत्व, कुरुक्षेत्र- 54(12): पृ.सं. 11।
2- https%//swachhbharatmission-gov-in/SBMCMS/indeÛ&hi-htm
3. योजना नवम्बर 2019 पेज न. 29
4- Central List of OBCs For The State of Uttarakhand 73-Saqqa-Bhisti, Bhisti-Abbasi 12015/13/2010&B-C II. Dt.08/12/2011
5. जामयल तर्मिजी, किताब-उल (रिवात, पेज न) 29, अलहदीस 353, जिल्द 5, सफा 308
6. डॉ. निसार खान, प्रधानमंत्री आवास योजना अन अस्सेस्मेंट फ्रॉम हाउसिंग एडुकेसी प्रस्पेक्टिव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रीवियूस (इजार), E&ISSN 2348-1269, P-ISSN 2349-5138
7- &https%//swachhbharatmission-gov-in/SBMCMS/indeÛ&hi-htm
8. सिंह, वैजनाथ (2008), ग्रामीण स्वास्थ्य-मलेरिया से बचाव और उपचार, कुरुक्षेत्र 54 (12): पृ. सं. 7-9।
9. स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं हेतु टीकाकरण पुस्तिका, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रलय (संशोधित संस्करण 2011): पृ. सं. 04।

◆ ◆ ◆